Excellence in Agri Info
KHETI DUNIYAN

भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी
कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

खेती दुनिया

www.khetiduniyan.in

KHETI DUNIYAN, PATIALA

All Subject to Patiala Jurisdiction.

BOOK POST – PRINTED MATTER

• Issue Dated 18-05-2024• Vol.8 No.20 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

Godrej agrovet brighter farming

CROP PROTECTION BUSINESS

PYNA
Powered by D-HACC

शुरूआत सही, तो चिंता नही

शुरूआत सही तो चिंता नही का मतलब क्या है ?

- खरपतवार उगने से पहले इस्तेमाल
- चौड़ी एवं संकरी पत्ती के खरपतवारों पर असरदार
- लम्बा एवं प्रभावी नियंत्रण
- बेहतर उपज एवं मुनाफा

फायदा:

खरपतवारों को उगने से पहले ही खत्म करता है

सर्वोत्तम ZC फॉर्मूलेशन वाला बहुआयामी खरपतवारनाशक, जिससे आप के कपास को मिले लम्बी एवं बेहतरीन सुरक्षा

खरपतवार प्रबंधन पहले दिन से, कपास के प्रमुख संकरी एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों पर असरदार, जिससे कपास को मिले पूरा पोषण पहले दिन से ही

मैक्सकॉट

खरपतवार उगने से पहले इस्तेमाल होने वाला खरपतवारनाशक

मात्रा : 800 मिलि / एकड़

Godrej agrovet brighter farming

गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड, गोदरेज वन, तीसरी मंज़िल, पिरोजशानगर, इस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे, विक्रोली (पूर्व), मुंबई - 400 079,
Customer Care No.: 022-25194491 Email : customercare@godrejagrovet.com

निर्यात में विविधता से चुनौतियों का मुकाबला

हाल ही में 4 मई से सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया है। यह फैसला देश में प्याज के मौजूदा रबी पैदावार के अच्छे होने और बेहतर मॉनसून की वजह से इस वर्ष खरीफ के दौरान भी बढ़िया पैदावार की संभावना को देखते हुए किया गया है। सरकार ने प्याज निर्यात की न्यूनतम कीमत 550 डॉलर प्रति टन तय की है और इस पर 40 फीसदी का निर्यात शुल्क भी लगेगा। इस फैसले की वजह से देश में प्याज की पैदावार करने वाले किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी। ज्ञातव्य है कि पिछले वर्ष दिसंबर, 2023 में केंद्र सरकार ने वर्ष 2022 के खरीफ पैदावार की स्थिति को देखते हुए प्याज निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया था। इसका असर घरेलू बाजार में खास तौर पर दिखा है। इस दौरान देश में प्याज की कीमतें अमूमन स्थिर रही हैं। चूंकि वर्ष 2023-24 में 2.55 करोड़ टन प्याज उत्पादन की संभावना है। जो देश की मांग और निर्यात मांग को देखते हुए पर्याप्त है। अभी निर्यात प्रतिबंधित होने के बावजूद बांग्लादेश, भूटान, यूएई, श्रीलंका आदि को कुछ मात्रा में प्याज की आपूर्ति की गई है। निश्चित रूप से प्याज निर्यात से प्याज उत्पादक किसानों को लाभ होगा।

दरअसल, घटते हुए वैश्विक व्यापार और घटते हुए वैश्विक निर्यात के बीच भारत से निर्यात के सूझबूझपूर्ण निर्णय लिए जाने होंगे। यद्यपि भारत से पिछले कुछ वर्षों में लगातार रिकॉर्ड निर्यात हुए हैं, लेकिन अब भीषण होते हुए इस्राइल-ईरान टकराव से गहराती हुई नई वैश्विक व्यापार चुनौतियों के बीच भारत को निर्यात बढ़ाने व आयात घटाने की विशेष रणनीति के साथ आगे आना होगा। खासतौर से हाल ही में 28 अप्रैल को प्रकाशित आर्थिक टैंक ग्लोबल ट्रेड एंड रिसर्च इनिशिएटिव की रिपोर्ट के मुताबिक भारत के वस्तु आयात में चीन की जो हिस्सेदारी बढ़कर 30 फीसदी के चिंताजनक स्तर पर पहुंचते हुए 101 अरब डॉलर की ऊंचाई पर पहुंच गई है, उसे आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया अभियानों से नियंत्रित करना होगा।

गौरतलब है कि हाल ही में वाणिज्य मंत्रालय की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में भारत से माल एवं सेवाओं का कुल निर्यात 776.68 अरब डॉलर रहा, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 776.40 अरब डॉलर रहा था। ऐसे में गत वित्त वर्ष में सेवा निर्यात 3.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 339.62 अरब डॉलर का रहा, जबकि वस्तु निर्यात 3.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ 437.06 अरब डॉलर रहा। जहां पिछले वर्ष में कुल आयात 854.80 अरब डॉलर का रहा, वहीं वर्ष 22-23 में कुल आयात 898 अरब डॉलर मूल्य का रहा था। ऐसे में पिछले वर्ष आयात में कमी से कुल व्यापार घाटे में 36 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। पिछले वर्ष में आयात में गिरावट की बड़ी वजह तेल का कम आयात था। कच्चे तेल की कीमतें कम रहने से बीते वर्ष में तेल के आयात पर करीब 16 फीसदी कम खर्च हुआ।

निश्चित रूप से बीते कुछ वर्षों में भारत के निर्यात का एक चमकदार पहलू सेवा निर्यात है। भारत डिजिटल माध्यम से मुहैया करायी गयी सेवाओं के निर्यात में वैश्विक बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहा है। डिजिटल माध्यम से सेवा निर्यात के तहत कंप्यूटर नेटवर्क का इस्तेमाल कर शिक्षा, मेडिकल

जयंतीलाल भंडारी

ट्रांसक्रिप्शन, गेमिंग, मनोरंजन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि के लिए दक्ष ऑपरेटर, कुशल प्रोग्रामर और कोडिंग विशेषज्ञ द्वारा दी जाने वाली सेवाएं शामिल हैं। भारत में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) की तेजी से नई स्थापनाओं के कारण भी सेवा निर्यात बढ़ रहा है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि वर्ष 2015-16 से लगाकर वर्ष 2022-23 के बीच भारत में जीसीसी की संख्या 60 फीसदी बढ़कर 1,600 से अधिक हो गई है। विश्व व्यापार संगठन की रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल माध्यम से जुड़ी हुई सेवाओं के तेजी से बढ़ते निर्यात के कारण इस क्षेत्र में भारत जर्मनी और चीन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया में अमेरिका, ब्रिटेन और आयरलैंड के बाद चौथे क्रम पर आ गया है।

इस समय भारत के प्रमुख निर्यात बाजारों में अमेरिका, यूएई, यूरोपीयन यूनियन, ब्रिटेन, सिंगापुर, मलेशिया, बांग्लादेश, नीदरलैंड, चीन व जर्मनी शामिल हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भारत से दवाओं का निर्यात 2023-24 में 27.9 अरब डॉलर पहुंच गया है। 2022-23 के दौरान यह आंकड़ा 25.4 अरब डॉलर रहा था। सरकार द्वारा प्रमुख दवा सामग्री और जेनेरिक दवाओं के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए जो दो उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाएं शुरू की गई हैं, उनका लाभ दवा निर्यात में मिलने लगा है। आईफोन के निर्यात में भी भारत उभरकर दिखाई दे रहा है। आईफोन निर्माता कंपनी एपल ने पिछले वर्ष में भारत से 10 अरब डॉलर के आईफोन का निर्यात किया, जो अभी तक का रिकॉर्ड है। कंपनी ने पीएलआई योजना के तहत पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में जो फोन बेचे, उनकी कीमत 2022-23 में बिके आईफोन की कीमत से दोगुनी करीब एक लाख करोड़ रुपये रही है। भारत में यह पहला मौका है, जब किसी कंपनी ने इतनी अधिक कीमत का अपना कोई उपभोक्ता उत्पाद निर्यात किया है। एपल दुनियाभर में वैल्यू चेन रखने वाली पहली ऐसी कंपनी है, जिसने भारत को घरेलू बाजार के बजाय निर्यात के लिए अपना केंद्र बना लिया है।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि युद्धजनित आर्थिक चुनौतियों के बीच भारत के लिए वैश्विक व्यापार और निर्यात बढ़ाने हेतु मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) की अहमियत और बढ़ गई है। भारत ने अब तक तीन एफटीए किए हैं। भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच मई 2022 में लागू द्विपक्षीय कारोबार में पिछले दो वर्षों में 15 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली है। यूएई, भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य, तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और चौथा सबसे बड़ा निवेशक देश है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया के साथ भी हुए एफटीए से भारत का ऑस्ट्रेलिया के साथ भी द्विपक्षीय व्यापार बढ़ा है। विगत 10 मार्च को भारत और चार यूरोपीय देशों के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (ईएफटीए) के बीच निवेश और वस्तुओं एवं सेवाओं के दोतरफा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए किया गया एफटीए भी अत्यधिक उपयोगी है।

दुनिया में भू राजनीतिक मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं, उससे कच्चे तेल के दाम के साथ साथ आपूर्ति संकट बढ़ने की चिंताएं मुंहबाएं खड़ी हैं। इससे भारत के वैश्विक व्यापार व निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में भारत को निर्यात बढ़ाने व चीन से आयात घटाने की नई रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। देश में उच्च ब्याज दरों और मांग में कमी के कारण निर्यात के मोर्चे पर जूझ रहे छोटे निर्यातकों को कम ब्याज दरों पर ऋण मुहैया कराने व बैंक को इसके बदले सरकार से मुआवजा दिए जाने के लिए लागू की गई इंटरेस्ट इक्वलाइजेशन स्कीम (आईईएस) की जो अवधि 30 जून, 2024 को समाप्त हो रही है, उसे एक वर्ष के लिए और आगे बढ़ाया जाना लाभप्रद होगा।

जिस तरह विकसित अर्थव्यवस्था वाले कई देश लम्बे समुद्री आवागमन से पहुंचने वाले दूरदराज के देशों की बजाय अपने तट के आसपास के देशों में कारोबार पर जोर दे रहे हैं, वैसी रणनीति पर भारत को भी ध्यान देना होगा। यद्यपि भारत को दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी सेवा निर्यात में तुलनात्मक रूप से बढ़त हासिल है लेकिन यह बात ध्यान में रखी जानी होगी कि अब सेवा निर्यात के क्षेत्र में भी लगातार प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में भारत से डिजिटल सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्तेष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करना होंगे।

लेखक अर्थशास्त्री हैं।

कपास में सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु उपाय व अभियान

महावीर मलिक, विषय विशेषज्ञ (पौध संरक्षण), कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा;
नरेन्द्र कुमार, संयोजक व ज़िला विस्तार विशेषज्ञ (कीट विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, सदलपुर
भूपेन्द्र सिंह व श्वाति मेहरा, सहायक वैज्ञानिक (कीट विज्ञान विभाग), हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

सफेद मक्खी एक ऐसा कीट है, जो फसल में नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ विषाणु रोग फैला कर पैदावार में काफी कमी ला देती है। कपास की फसल में सफेद मक्खी यानी फाका किसी एक किसान की समस्या नहीं, बल्कि कृषि संबंधित व्यवसाय से जुड़े किसान, मज़दूर, व्यापारी, डीलर, डिस्ट्रीब्यूटर, दुकानदार, कम्पनी, सरकार, कृषि अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, कृषि विभाग व संस्थानों की भी समस्या है। इसलिए इसके नियंत्रण के लिए सभी किसानों, विक्रेताओं व कृषि विशेषज्ञों की भागीदारी बेहद ज़रुरी है। आओ, इस अभियान से जुड़ें व इसे सफल बनाएं।

हमारे देश में कपास की खेती नगदी फसल के रूप में होती है। इसकी खेती से किसानों को अच्छा मुनाफा मिलता है। व्यवसायिक रूप से कपास की खेती को सफेद सोना के रूप में भी जाना जाता है। सबसे ज्यादा

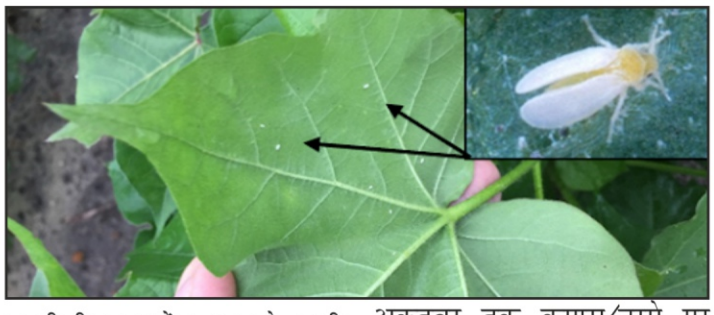

ज़हरीली दवाओं का प्रयोग भी कपास की फसल में होता है, जिसका कारण हानिकारक कीटों का प्रकोप है। बी.टी. कपास के आने के बाद जहां एक तरफ विभिन्न सुंडियों (अमेरिकन, गुलाबी, चित्तीदार, तम्बाकू की सुंडी) से छुटकारा तो मिला है, लेकिन अन्य रस चूसने वाले कीट सफेद मक्खी, हरा तेला, थ्रिप्स, मिलीबग, चेपा, लाल व भूरे धूसर कीड़े आदि का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। इनमें सफेद मक्खी एक ऐसा कीट है, जो फसल में नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ विषाणु रोग फैला कर पैदावार में काफी कमी ला देती है। कपास की फसल में सफेद मक्खी यानी फाका किसी एक किसान की समस्या नहीं, बल्कि कृषि संबंधित व्यवसाय से जुड़े किसान, मज़दूर, व्यापारी, डीलर, डिस्ट्रीब्यूटर, दुकानदार, कम्पनी, सरकार, कृषि अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, कृषि विभाग व संस्थानों की भी समस्या है। इसलिए इसके नियंत्रण के लिए सभी किसानों, विक्रेताओं व कृषि विशेषज्ञों की भागीदारी बेहद ज़रुरी है। आओ, इस अभियान से जुड़ें व इसे सफल बनाएं। सफेद मक्खी के सफल नियंत्रण के लिए उसकी पहचान, जीवन-चक्र, अनुकूल मौसम व हानि के लक्षण की विस्तृत जानकारी होना अति आवश्यक है।

सफेद मक्खी की पहचान : सफेद मक्खी जिसे फाका या सफेद मच्छर के नाम से भी जाना जाता है। इस कीट की शारीरिक लम्बाई 1 से 1.5 मिलीमीटर होती है, जिसके पंख सफेद, शरीर हल्का पीला, सफेद पाऊडर से ढका होता है। इसके अण्डे चीकने लगभग अण्डाकार, चौड़े आकार के डंडक सहित होते हैं। ताज़े दिए अण्डे हल्के पीले होते हैं, जो बाद में गहरे भूरे हो जाते हैं। नवजात शिशु अंडाकार, हल्के पीले रंग का और क्रियाशील टांगों वाला होता है। बड़े शिशु अंडाकार, दबे हुए, पीले सुनहरी एवं टांगें अक्रियाशील होती हैं।

जीवन-चक्र : यह कीट पूरे वर्ष प्रजनन करता है और सक्रिय रहता है। इसकी सभी अवस्थाएं अंडा, शिशु, प्यूपा, व्यसक पूरे वर्ष पाई जाती हैं। जून-जुलाई में यह कपास पर आ जाता है तथा अक्तूबर तक कपास/नरमे पर सक्रिय रहता है। एक मादा पत्तियों की निचली सतह पर एक-एक करके 100 से 300 अंडे (लगभग 119 अंडे औसतन) देती है। गर्मियों में अंडा देने की अवस्था 3 से 5 दिनों में पूरा कर ली जाती है। निम्न/शिशु का विकास समय 9 से 14 दिन होता है। प्यूपा अवस्था 2 से 8 दिन में पूरी हो जाती है। पूरा जीवन 14 से 22 दिनों में सम्पूर्ण हो जाता है। इस प्रकार एक वर्ष में इस कीट की लगभग 11 पीढ़ियां होती हैं।

कपास में सफेद मक्खी के अधिक प्रकोप के कारण :

1. कपास की पिछेती बुवाई तथा बुवाई के समय डी.ए.पी., ज़िंक, यूरिया, पोटाश आदि खादों का प्रयोग ना करना।

2. कम वर्षा का होना तथा वर्षा के दिनों में अधिक अंतराल होना। उच्च तापमान 28 डिग्री से 36 डिग्री तापमान (औसतन 32 से 33 डिग्री सैल्सियस) और शुष्क मौसम, 60 से 92 प्रतिशत संक्षिप्त नमी इस कीट के लिए बहुत सहायक है।

3. कपास के आस-पास खरपतवारों की अधिकता।

4. बिना सिफारिश किए गए रासायनिक कीटनाशियों को अंधाधुंध

प्रयोग करना। एक से ज्यादा कीटनाशियों को मिलाने तथा कम या ज्यादा दवा के प्रयोग से इस कीट की अंडा देने की क्षमता बढ़ जाती है।

* पिछेती फसल में प्रकोप बहुत ज्यादा होता है। कपास में पानी व पोषक तत्वों की कमी से सफेद मक्खी ज्यादा नुकसान पहुंचाती है।

* शुरूआती अवस्था में गलत कीटनाशी के प्रयोग से कीट में प्रतिरोधक क्षमता व प्रजनन क्षमता बढ़ती है, जिसे बाद में नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है।

* स्प्रे के दौरान गलत छिड़काव यंत्र, नोज़ल के प्रयोग व गलत छिड़काव विधि से प्रभावी परिणाम नहीं मिलते।

* खराब मिट्टी व नमकीन/क्षारीय पानी की वजह से भी पौधा कमज़ोर हो जाता है।

* अत्याधिक गर्मी, मई-जून में रुक-रुक कर बारिश होना, जुलाई-अगस्त में बारिश का ना होना। सफेद मक्खी के पनपने में सहायक है।

* नकली, मिलावटी, गैर-सिफारिश कीटनाशी / फफूंदनाशी एवं दवा निर्माता कम्पनियों द्वारा गलत राय व किसान की हड़बड़ाहट सफेद मक्खी नियंत्रण में बाधक है।

कपास में सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु उपाय :

बुवाई के समय :

* सिफारिश की गई किस्मों/हाईब्रिडस का ही प्रयोग करें।

* फसल की बुवाई 15 मई से पहले ज़रुर कर लें। देरी से

शेष पृष्ठ 5 पर

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 08 अंक : 20

तिथि : 18-05-2024

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्ठिडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

Editor, Printer & Publisher **JAGPREET SINGH**
Printed at **Vargenia Printers**, Sher-e-Punjab Market, Gaushala Road, PATIALA &
Published at Patiala for Prop. **JAGPREET SINGH**

गेहूं की देसी वैरायटी सोनामोती फतेहपुर गांव के सरपंच मनप्रीत के खेत की शान, इंटरक्रॉपिंग में भरोसा

सोनामोती की पैदावार कम लेकिन कीमत बहुत अधिक, 10 हज़ार/क्विंटल में उपलब्ध

ज़िला होशियारपुर के फतेहपुर गांव के 38 वर्षीय किसान मनप्रीत सिंह 3 में ऑर्गेनिक खेती करते हैं। वह इंटरक्रॉपिंग (एक साथ कई फसलें लेना) करते हैं, जिससे अधिक मुनाफा (25 से 30 प्रतिशत) होता है। उन्होंने करीब 2 एकड़ में गेहूं के तीन बीजों की खेती की थी। इनमें सोनामोती, ज़िंक-1 और चपाती शामिल हैं। सोनामोती की खेती सिखों के पहले गुरु नानक देव जी भी अपने खेतों में करते रहे हैं। ज़िंक बीज में ज़िंक की मात्रा ज्यादा होती है।

मनप्रीत गांव के सरपंच भी हैं। उन्होंने बताया कि घर में खाने के लिए रख कर वह शेष गेहूं को 5 हज़ार से 10 हज़ार रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बेच देते हैं। सोनामोती 10 हज़ार प्रति क्विंटल पर बेचते हैं। अभी इन बीजों का उत्पादन कम होता है। उनके खेतों में सोनामोती की पैदावार 7-8 क्विंटल और ज़िंक-1 व चपाती की पैदावार 9-10 क्विंटल हुई है। लोग घर आकर ही खरीद ले जाते हैं। सोनामोती का बीज आमतौर पर नहीं मिलता है। करीब 10 साल पहले माझा एरिया के एक किसान से थोड़ा बीज मिल गया था, तभी से इसे संभाल रखा है और हर साल इसकी बुवाई की जा रही है। सोनामोती के दाने गोल होते हैं।

वह बताते हैं कि उनके पिता सेना से बतौर सूबेदार रिटायर्ड हुए थे। उन्होंने ऑर्गेनिक खेती शुरू की थी। 2015 में उनका निधन हो गया था। उनके बाद भी वह यह खेती करते आ रहे हैं। वह अपने खेतों में एक समय में एक से ज्यादा फसलें ले रहे हैं। गेहूं के बीच गन्ने की फसल ली जा रही है। गेहूं की कटाई के बाद गन्ने की फसल दिखने लगी है। अब 40-45 दिन में तैयार होने वाली सब्ज़ियों की फसल ली जाएगी। समय पर बासमती चावल की खेती भी करते हैं। उन्होंने अपने खेतों में पोपलर लगा रखा है। उन्होंने अपने खेतों में पोपलर लगा रखा है। सेब, बेर, अमरूद, आम आदि के पेड़-पौधे भी लगा रहे हैं।

पिग फार्म से सालाना 8 लाख की आमदनी

12वीं पास मनप्रीत सिंह के अनुसार, उसने 2012 में महज 10 मरले में 10 सूअरों के साथ पिग फार्म शुरू किया था। उनके यहां औसतन 100 सूअर रहते हैं और हर साल 80 से 100 सूअर तक बेच देते हैं। पिग फार्म में ही हर साल 7-8 लाख रुपए की आमदन हो जाती है। मौजूदा समय तो वह सूअरों को खाने के लिए फीड देते हैं। घरों, होटलों के वेस्ट से भी इन्हें आसानी से पाला जा सकता है। कंपनियां 200 रुपए प्रति किलोग्राम के हिसाब से सूअर खरीदती हैं। एक बच्चा 7-8 महीने में बेचने लायक हो जाता है। वह सूअरों की वेस्ट का उपयोग खेतों में करते हैं।

यहीं रहकर दिल लगाकर करें काम

मनप्रीत का कहना है कि इस काम में परिवार साथ देता रहता है, जिसमें मां, पत्नी, बेटी, भाई-भाभी व इनके बच्चे शामिल हैं। भाई हाल ही में दुबई गया है। उनका मानना है कि अगर कोई भी काम दिल लगाकर किया जाए, तो नतीजे अच्छे आते हैं। इसलिए अपने खेत-ज़मीन छोड़ कर पक्के तौर पर विदेश जाने की इच्छा रखने वाले नौजवानों को यहीं रहकर काम करना चाहिए। उन्हें अधिक लाभ होगा।

मछली पालक टैंक की सतह पर कीचड़ न बनने दें

तालाब में ताज़ा पानी डालें, न्यूनतम जल स्तर 5 से 6 फीट बनाए रखें

मछली पालन विभाग ने लू से बचने के लिए मछली-पालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। विभाग के सहायक निदेशक करमजीत सिंह ने कहा कि पालकों को मछलियों के तालाब में न्यूनतम 5-6 फीट जल स्तर बनाए रखना चाहिए। मछली पालन के लिए पी.एच. 7.5-8.5, पानी का रंग हल्का हरा, पानी में घुलित ऑक्सीजन 5 से 10 पीपीएम सहित आवश्यक पैरामीटर भी बनाए रखना चाहिए। कुल क्षारीयता 100-250 पीपीएम, कुल कठोरता 200 पीपीएम से कम और अमोनिया 0.1 पीपीएम से कम होना चाहिए।

इसके अलावा विभाग द्वारा निर्धारित मात्रा से अधिक खाद एवं चारे का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मुर्गियों की बीठ डालने से बचना चाहिए। तालाब में अवांछित कीटों को मारने के लिए डीज़ल, केरोसीन, साइपरमेथ्रिन या साबुन, तेल इमल्शन का उपयोग किया जा सकता है। पूंग कल्चर टैंक में अतिरिक्त मछली का भंडारण नहीं किया जाना चाहिए। मछली की मार्केटिंग करते समय प्रयोग में आने वाले जालों को 5 से 10 पीपीएम लाल दवा के घोल में आधे घंटे के लिए डुबोया जाना चाहिए, ताकि जाल में फैलने वाली बीमारियों को रोका जा सके।

सैंपलिंग के माध्यम से यदि जूं का प्रभाव दिखे तो आइवरमेक्टिन दवा या साइपरमेथ्रिन 10 प्रतिशत सीसी का घोल 50 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। यह प्रक्रिया हर सप्ताह दोहराई जानी चाहिए। अत्याधिक गर्मी या बादल छाए रहने पर मछली का चारा तुरन्त बंद कर देना चाहिए। तालाब में ताज़ा पानी डालना चाहिए। तालाब में ताज़ा पानी डालना चाहिए। पानी में ऑक्सीजन की मात्रा बनाए रखने के लिए ताज़ा पानी डालें अथवा एक मैकेनिकल ऐरीएटर का उपयोग करें, ताकि वातावरण में मौजूद 21 प्रतिशत ऑक्सीजन में से कुछ पानी में घुल जाए। इसके अतिरिक्त मछली टैंक की सतह पर कोई कीचड़ नहीं बनने देना चाहिए। मछली का भंडारण केवल सुबह या शाम के समय ही करना चाहिए। मछली पूंग लाते समय उपयुक्त वाहन का इस्तेमाल करना चाहिए और पूंग को अनुकूल बनाना आवश्यक है। पूंग को पॉलीथीन के लिफाफों में आवश्यकता से अधिक नहीं पैक करना चाहिए।

पूंग का भंडारण करने से पहले तालाब के पानी के पैरामीटर स्वीकार्य होने चाहिए। इसलिए तालाब के पानी की गुणवत्ता के लिए विभागीय प्रयोगशालाओं से परीक्षण करवाया जाना चाहिए और आपातकालीन स्थिति में मत्स्य विभाग के अधिकारियां से सम्पर्क स्थापित किया जाना चाहिए।

आम की मुख्य बीमारियां व उनकी रोकथाम

आर.एस. चौहान, महा सिंह जागलान, गजेंद्र सिंह एवं राजेश लाठर,
कृषि विज्ञान केन्द्र, पंचकूला, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (मो. 94162-44487)

आम की खेती उष्ण व समशीतोष्ण, दोनों प्रकार की जलवायु में की जाती है। भारतवर्ष में आम लगभग सभी हिस्सों में उगाया जाता है। यह जनमानस का बहुत ही प्रिय फल है तथा इसे फलों का राजा भी कहा जाता है। उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान है तथा कुल उत्पादन का लगभग 60 प्रतिशत उत्पादन भारत में होता है। आम की फसल में विभिन्न प्रकार के रोगों का प्रकोप होता है और यदि समय रहते उनका नियंत्रण ना किया जाए, तो उत्पादन में भारी कमी आ सकती है। आम के मुख्य रोगों का प्रबंधन निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

1. आम का विकृत या गुच्छा-मुच्छा रोग (मालफॉर्मेशन)

यह आम का एक बहुत

ही घातक रोग है। इसमें आम का सारा बौर पूर्ण नपुसंक फूलों के गुच्छों के रूप में बदल जता है। यह रोग आम की किस्म, आयु, मौसम और स्थान के अनुसार अलग-अलग तीव्रता में आता है। दो प्रकार के लक्षण सामान्यतया देखने में आते हैं। पहले प्रकार में बड़े पेड़ों पर बौर आते समय फूलों के स्थान पर गुच्छा बन जाता है तथा इनमें छोटी-छोटी पत्तियां भी दिखाई देती हैं। ऐसे बौर में मादा फूलों की अपेक्षा नर फूलों की संख्या अधिक होती है तथा इनमें फल नहीं बनते। यदि कुछ फल बन भी जाएं, तो वह छोटे आकार की अवस्था में ही गिर जाते हैं। दूसरे प्रकार में छोटे पेड़ों की टहनियों के सिरों के पास काफी संख्या में छोटी-छोटी पत्तियां बन जाती हैं तथा एक झाड़ू जैसी आकृति बन जाती है। पौधों की वृद्धि रुक जाती है। कभी-कभी पौधे मर भी जाते हैं।

नियंत्रण : इस रोग की रोकथाम के लिए अगस्त-नवम्बर के महीने में सभी बेढंगे फूलों या रोग ग्रसित गुच्छों को लगभग 6 से 12 इंच पीछे से चाकू या कैंची से काट दें। फफूंद व कीटों से बचाव के लिए अगस्त-सितम्बर तथा दिसंबर-जनवरी में कैप्टान 0.1 प्रतिशत (1 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में) व मैलाथियान 0.1 प्रतिशत के मिश्रण में कोई पोषक तत्व मिला कर छिड़काव करें। फूल के गुच्दे बनते समय बाविस्टिन नामक दवा का 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करें। सितम्बर के अन्त में 300 पी.पी.एम. नेप्थलीन एसिटिक एसिड (300 ग्राम एन.एन.ए. प्रति 100 लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करें।

2. टहनीमार रोग (एंथ्रैक्नोज़)

इस रोग का प्रभाव पत्तियों, टहनियों, फूलों में फलों पर भूरे रंग के छोटे-छोटे धब्बों के रूप में दिखाई देता है। धीरे-धीरे इनका आकार बढ़ जाता है तथा एक-दूसरे में मिल कर पत्तियों पर पूरी तरह फैल जाते हैं। धब्बे सूखने के बाद सुराख बन जाते हैं। टहनियों पर यह रोग ऊपर से शुरू होकर नीचे की तरफ फैलता है। धीरे-धीरे प्रभावित टहनियां सूख जाती हैं तथा सारी पत्तियां झड़ जाती हैं। यदि बौर आते समय मौसम में नमी हो तो यह रोग फूलों पर प्रभाव डालता है

तथा भूरे से काले रंग के धब्बे फूलों पर पड़ जाते हैं तथा फूल सूख कर गिर जाते हैं। फलों पर यद्यपि इस रोग का असर पहले ही पड़ जाता है, लेकिन लक्षण फलों के पकने पर ही दिखाई देते हैं। उनपर धब्बे बन जाते हैं तथा धब्बों का बीच का स्थान थोड़ा अंदर धंस जाता है। इस रोग का फफूंदरोग ग्रसित टहनियों पर जीवित रह कर अनुकूल मौसम आने पर फिर से फसल को प्रभावित करता है।

नियंत्रण : रोग ग्रसित टहनियों को काट दें तथा कटे हुए स्थान पर बोर्डो पेस्ट लगा दें और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) का जनवरी, फरवरी, अप्रैल व सितम्बर में छिड़काव करें।

3. सफेद चूर्णी (पाऊडरी मिल्ड्यू)

पत्तों व फूलों पर मटमैला सफेद चूर्ण सा बन जाता है। प्रभावित फूल गिर जाते हैं। फूल लगने के समय रातों का ठंडा व नम होना रोग के फैलाव में सहायक है। इस रोग का फफूंद साल भर के पेड़ पर जीवित रहता है तथा अनुकूल अवस्था में भयंकर रूप धारण कर लेता है।

नियंत्रण : इस रोग का प्रकोप उन भागों में अधिक होता है, जहां ईंटों के भट्ठों से निकलने वाली गैस ना केवल रोग के फैलाव में सहायक है, अपितु आम के फलों में कई बार अनेक प्रकार की विकृतियां भी पैदा करती हैं। इसलिए हमेशा सलाह दी जाती है कि आम के बाग ईंटों के भट्ठों से दूर लगाएं। प्रभावित

बागों में बोरेक्स पाऊडर का 0.6 प्रतिशत (6 ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी) के घोल का छिड़काव फूल आने से पहले फरवरी और अप्रैल में तथा तीसरा छिड़काव फल बनने के बाद 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का करें। अगस्त-नवम्बर के महीने में टेढ़ी-मेढ़ी टहनियों और बेढंगे फूलों के गुच्छों को काट दें। संतुलित खादों का प्रयोग करें।

शेष पृष्ठ 3 की

कपास में सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु उपाय व अभियान

की गई बुवाई पर कीटों व बीमारियों का प्रकोप ज्यादा होता है।

* कतार से कतार व पौधे से पौधे की उचित दूरी रखें।

* खादों को संतुलित मात्रा में ही प्रयोग करें। उचित फसल-चक्र व फसल विविधता अपनाएं।

बुवाई के बाद :

* कीट के वैकल्पिक परपोषी पौधों व खरपतवारों जैसे पुठकंडा, पीली बूटी, कांगी बूटी, कांग्रेस घास, भांखड़ी व लैन्टाना को नष्ट करें।

* मक्का, ज्वार, बाजरा को बी.टी. कपास के चारों तरफ अवरोधी फसल के रूप में लगाएं।

* पीले रंग के चिपचिपे ट्रैप का खेतों में 50 ट्रैप प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

* परजीवी जैसे एनकारशिया व एरीटमोसीरस तथा परभक्षी जैसे लेडीबर्ग भृंग, क्राइसोपा आदि का संरक्षण व संवर्धन करें। ये प्राकृतिक तौर पर सफेद मक्खी के बच्चे व प्यूपों को खाते हैं।

छिड़काव करते समय :

* पत्तियों पर चिपचिपाहट व औसतन 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ती मिलने पर शुरू के दो छिड़कावों में केवल नीम आधारित कीटनाशकों का आर्थिक आगार के आधार पर 5 दिन के अंतराल पर प्रयोग करें। इसके लिए एक लीटर निंबीसीडीन/नीमगार्ड/अचूक को 200 लीटर पानी में मिला कर

प्रति एकड़ छिड़काव करें। बिना सिफारिश किए गए रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग ना करें।

* कीटनाशकों का छिड़काव करते समय ध्यान रखें कि कीटनाशक पत्तों की निचली सतह तक ज़रुर पहुंचे।

* अधिक प्रकोप की अवस्था में 250-350 मिलीलीटर रोगोर 30 ई.सी. या 300-400 मिलीलीटर मैटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. का बारी-बारी से नीम आधारित कीटनाशियों के साथ मिला कर प्रति एकड़ 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। या स्पाईरोमेसीफेन 22.9 प्रतिशत डब्ल्यू.डब्ल्यू.एस.सी. (ओबेरॉन 240 एस.सी.) 240 मिलीलीटर (55 ग्राम क्रियाशील तत्व) या पायरीप्रोक्सीफेन 10 प्रतिशत ई.सी. (डाएटा 10 प्रतिशत ई.सी.) 400 मिलीलीटर (40 ग्राम क्रियाशील तत्व) को 200 लीटर पानी में मिला कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

* कृषि विशेषज्ञ/अधिकारी की सलाह के बाद ही कीटनाशी / फफूंदनाशी दवाएं खरीदें। दवा विक्रेता या किसी कम्पनी के एजेंट की अनुचित राय ना मानें।

* छिड़काव अकेले खेत में करने की बजाए समूह बना कर पड़ोसी किसानों के साथ मिल कर बड़े क्षेत्र में करें, क्योंकि सफेद मक्खी एक खेत से दूसरे खेत में चली जाती है।

कृषि विभाग व संबंधित संस्थानों की भागीदारी : कृषि विभाग व विश्वविद्यालयों से जुड़े अधिकारी व विशेषज्ञों को चाहिए कि किसानों को ज्यादा से ज्यादा प्रशिक्षण दें व अभियान चला कर किसानों को जागरूक करें। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन व खेल दिवस द्वारा तकनीक बताओ व करके दिखाओ।

किसान का दायित्व : सफेद मक्खी नियंत्रण अभियान में किसानों का रोल अहम है, उन्हें चाहिए कि वे कृषि विशेषज्ञों की देख-रेख में बिना हड़बड़ाहट के जारी निर्देशों का पालन करें।

डीलर/डिस्ट्रीब्यूटर व दवा विक्रेता कम्पनी के लिए सलाह :

1. गैर-सिफारिश कीटनाशी, फफूंदनाशी, उर्वरक व खरपतवारनाशी दवाओं की सिफारिश ना करें। क्योंकि किसान की फसल खराब होने की अवस्था में बाज़ार में मंदी आती है व पैसा वापसी की संभावना नहीं रहती।

2. किसान को शुद्ध व उन्नत बीज बिल सहित दें। बढ़िया किस्म की कीटनाशी, फफूंदनाशी आदि दवाएं कृषि विशेषज्ञों की राय लेकर किसानों को उपलब्ध करवाएं।

3. दवा की उचित मात्रा ही किसान को बताएं तथा एक से ज्यादा दवा मिलाने की सलाह ना दें। किसान को हुए नुकसान का सीधा असर बाज़ार, व्यापारी, मज़दूर, सरकार, कर्मचारी सभी पर पड़ता है।

4. डीलर अपनी दुकान के सामने बागवानी विभाग, कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय आदि के सम्पर्क फोन नं. के अलावा टोल फ्री नम्बर आदि लिखें।

यह एक जाना–माना तथ्य है कि भारत में नवम्बर और जून माह के बीच वनों में आग लगती रहती है। इसकी रोकथाम के लिए यथेष्ट तैयारियां पहले से सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि घटना घटने पर लपटों पर तुरत–फुरत काबू पाया जा सके। यह भी हकीकत है कि इस समस्या से निपटने में प्रशासन को खासी मुश्किलें आड़े आती हैं। अधिकारी अपनी जिम्मेवारी से बचने के लिए आग लगने का दोष शुष्क मौसम या असामाजिक तत्वों पर डालकर पल्ला झाड़ लेते हैं। उत्तराखंड और भारत में अन्य जगह वनीय अग्निकांड का प्रबंधन करने में सरकारों की असफलता स्पष्ट तौर पर पूर्व–प्रबंध तैयार न रखने और प्रशासन की अक्षम्य कोताही का नतीजा है।

रोकथाम की पूर्व तैयारी से थमेगी वनों की आग

पिछले बरसों की भांति इस साल भी भारत के विभिन्न इलाकों के जंगल में आग धधक रही है। उत्तराखंड में स्थिति विशेष रूप से गंभीर है जहां पर हजारों हैक्टेयर वन क्षेत्र में आग लगी हुई है। पहाड़ी सूबों के जंगलों में लगी आग के कारण स्थिति संकटमयी हो गई है। यह एक जाना-माना तथ्य है कि भारत में नवम्बर और जून माह के बीच वनों में आग लगती रहती है। इसकी रोकथाम के लिए यथेष्ट तैयारियां पहले से सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि घटना घटने पर लपटों पर तुरत-फुरत काबू पाया जा सके। यह भी हकीकत है कि इस समस्या से निपटने में प्रशासन को खासी मुश्किलें आड़े आती हैं। अधिकारी अपनी जिम्मेवारी से बचने के लिए आग लगने का दोष शुष्क मौसम या असामाजिक तत्वों पर डालकर पल्ला झाड़ लेते हैं। उत्तराखंड और भारत में अन्य जगह वनीय अग्निकांड का प्रबंधन करने में सरकारों की असफलता स्पष्ट तौर पर पूर्व-प्रबंध तैयार न रखने और प्रशासन की अक्षम्य कोताही का नतीजा है।

वर्ष 2022 में जारी भारत वन सर्वेक्षण (एफएसआई) रिपोर्ट-2021 बताती है कि वर्ष 2021 में देशभर में वनीय आग के 3,45,989 मामले दर्ज हुए, जो कि अब तक के रिकॉर्ड में सबसे अधिक हैं। यह मामले 2019 के मुकाबले लगभग 1 लाख अधिक थे। इस रिपोर्ट से पर्यावरण, वन एवं मौसम मंत्रालय और देशभर की राज्य सरकारों के कान खड़े हो जाने चाहिए थे। हमें इतनी समझ होना जरूरी है कि वनीय स्रोत मनुष्य के साथ-साथ समस्त वनीय जीवन के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। जंगलों में साल-दर-साल लगने वाली आग का पर्यावरणीय संतुलन और अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले विनाशकारी परिणामों से निपटने के उपायों को लेकर बातें तो बहुत की जाती हैं लेकिन जैसे ही इंद्रदेव की कृपा से आग बुझी, सब कुछ भुला दिया जाता है।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में अपने कार्यकाल (1997-2002) के दौरान मैंने देश के लिए एक वन अग्निशमन रणनीति तैयार की थी और इनसे होने वाले वार्षिक नुकसान की गणना की। मैंने इंडोनेशिया के बागोर में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय विचारगोष्ठी में भाग लिया था, उस वक्त 1999 में देश के कोयला खान युक्त वनों में आग लगी थी। इस बैठक में सर्वसम्मति बनी कि आग लगने पर बुझाने के यत्न करने से बेहतर है रोकथाम के उपाय पहले करके रखना क्योंकि एक बार आग ने दावानल का रूप धर लिया तो कितनी भी मशीनरी और संसाधन झोंक दें, काबू पाना असंभव है। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने वर्ष 2001 में नए दिशा-निर्देश जारी किए और आग बुझाने के तरीकों में हवाई जहाज और हेलीकॉप्टरों का उपयोग करने का विचार त्याग दिया। वह इसलिए भी कि भारत में कनाडा, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया

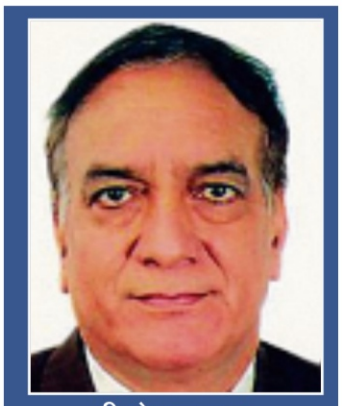

वी.के. बहुगुणा

जितने विशालकाय जंगल नहीं हैं, और वहां पर अग्निशमन के लिए हवाई जहाजों से विशेष झाग बरसाने के साथ उपकरणों से लैस तगड़ी अग्निशमन कार्रवाई की जाती है।

तब यह निर्णय लिया गया कि भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग को उपग्रह का इस्तेमाल करने के लिए विशेष फंड दिया जाए ताकि आग की शिनाख्त होते ही संबंधित विभाग को तुरंत सतर्क किया जा सके। यह तरीका आज भी अमल में है, तदनुसार आग की घटना का पता चलते ही भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग संबंधित कर्मियों को सूचना देता है। प्रत्येक वन संभाग को नवम्बर माह से पहले आग लगने की संभावित जगहों और उसके आसपास की जमीन पर फैली अग्नि ग्राह्य सामग्री को हटाना, उपकरण एवं मशीनरी की जांच और मरम्मत कर तैयार-बर-तैयार रखना होता है। नवम्बर माह से पहले हरेक वन-संभाग और वन-प्रखंड को अग्नि रोकथाम रणनीति तैयार रखनी पड़ती है इसमें अधिक जोखिम वाले इलाकों को चिन्हित करना शामिल है संकट का आकलन करना, पूर्व चेतावनी व्यवस्था बैठाना और व्यावहारिक रूप से सुनिश्चित करना जैसे कि शमन उपकरण, पानी की मश्कें इत्यादि तैयार रखना। बस्तियों के आसपास के वनीय क्षेत्र में आपदा प्रबंधन की पूर्व-रूपरेखा बनाना।

संयुक्त वनीय प्रबंधन या वन पंचायतों के लिए विशेष फंड जारी किए गए ताकि आग लगने के मौसम में गांववासियों की मदद ली जा सके। राज्य सरकारों से भारतीय वन कानून के अनुच्छेद 79 को लागू करने के निर्देश दिए गए, जिसके तहत गांववासियों और सरकारी कर्मचारियों का कानूनी कर्तव्य है कि आग लगने की सूचना दें और काबू करने में मदद करें और इसके लिए चिन्हित क्षेत्रों में टीमें भी तैयार-बर-तैयार रखी जाएं। मंत्रालय के लिए हर साल इन दिशा-निर्देशों की पुनर्समीक्षा और आकलन करते रहना जरूरी है। यदि प्रक्रिया पहले से तयशुदा और अपनी जगह हो, तब राज्य सरकारें हर बार आग लगने पर खुद को असहाय कैसे महसूस कर सकती हैं। आग की निगरानी और पूर्व-तैयारियों में कोताही की वजहों और दोषियों को ढूंढ़ना राज्य सरकारों का जिम्मा है।

यदि राज्य प्रशासन और वन अधिकारी तय हो चुके प्रतिरोधक उपायों और संहिता पर कड़ाई से अमल करें और साथ ही यथेष्ट उपकरण, मानव शक्ति, धन और अग्निरोधक एवं आपदा नियंत्रण उपायों पर निरंतर नजर बनाए रखें तो अधिकांश वनीय आग की रोकथाम या उस पर जल्द-से-जल्द काबू पाया जा सकता है। आग पकड़ने वाली सामग्री और मानव की दखलअंदाजी का प्रबंधन एक मुख्य कारक है और आग लगने का मौसम शुरू होने से पहले और इसके दौरान, पंचायतों एवं स्थानीय लोगों को साथ जोड़कर पूर्वाभ्यास और निगरानी का इंतजाम करके अग्नि घटनाओं को नगण्य किया जा सकता है। मानक कार्यकारी प्रक्रिया की समीक्षा करते रहना जरूरी है और प्रत्येक राज्य के मुख्यमंत्री का ध्यान इस तरफ विशेष रूप से होना आवश्यक है क्योंकि फिलहाल ऐसा लगता है कि केवल उनके स्तर पर तंत्र से काम करवाया जा सकता है।

देश में वनीय आग की संख्या में लगातार हो रही बढ़ोतरी और अन्य प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी, रोकथाम और पूर्व-तैयारियों को सख्ती से लागू करवाने के लिए प्रधानमंत्री और पर्यावरण मंत्रालय के लिए नौकरशाहों को खींचकर रखना और सख्त कदम उठाना आवश्यक है। पहाड़ी सूबे उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश पर विशेष ध्यान देना होगा। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की सक्रियता देखकर नौकरशाही भी काम पर जुटी है और जमीनी स्तर पर इसके परिणाम दिखने लगे हैं। हालांकि बहुत बड़ा नुकसान पहले हो चुका है।

तमाम राजनीतिक दल लोगों को जागरूक करें और वनों को आग लगाने के दुष्परिणामों के बारे में आगाह करें। पिछले कुछ सालों से वास्तविक धरातल पर वन निरीक्षकों की कोताही और अकर्मण्यता सर्वविदित है। उत्तराखंड के वनीय क्षेत्र में वन-रक्षकों और अरण्यपालों की नाक के तले हजारों की संख्या में उभरे धार्मिक स्थलों ने हजारों हेक्टेयर वनीय भूमि पर अवैध कब्जा कर लिया। इस पर कार्रवाई तब जाकर हुई जब मामला लगातार प्रधानमंत्री कार्यालय से उठाया गया। मुख्यमंत्री ने पहल करते हुए कुछ सौ ढांचों को तुड़वाया। तथापि फील्ड अधिकारी या रेंज इंचार्ज या संभाग अधिकारी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। व्यवस्था में प्रत्येक की जिम्मेवारी और सुशासन देना तय हो, और उत्तराखंडवासी यही होते देखना चाहते हैं।

लेखक भारतीय वन अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक रहे हैं।

***

पौष्टिक और स्वादिष्ट हरे चारे के लिए

ज्वार की उन्नत खेती कैसे करें

डॉ. रघुबीर सिंह कालीरामणां, कृषि विकास अधिकारी, मिठी (सिवानी), ज़िला भिवानी, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा, पंचकूला

हरियाणा में अनेकों प्रकार की चारा फसलों को आसानी से उगाया जा सकता है। वैसे तो हरियाणा प्रदेश में अधिकतर किसान हरे चारे के लिए

बाजरा की प्रजाति जिसे स्थानीय भाषा में बाजर के नाम से जाना जाता है, उसे उगाया जाता है। बाजरा से ज्वार की तुलना में काफी कम चारा मिल पाता है तथा इसमें पौष्टिकता की भी कमी होती है। इसलिए पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा उपलब्ध करवाने के लिए किसानों को चाहिए कि बाजरा की बजाए ज्वार उगाएं ताकि अधिक मात्रा में हरा चारा मिल सके, जिसके लिए उन्नत किस्मों तथा उन्नत कृषि क्रियाओं को अपनाएं।

हरियाणा की चारा फसलों में ज्वार गर्मी व खरीफ मौसम की एक महत्वपूर्ण चारा फसल है, जो खरीफ चारे की लगभग 60 से 70 प्रतिशत मांग को पूरा करती है। हरे चारे के रूप में ज्वार पशुओं की पहली पसंद है। ज्वार हरी, मीठी, शीघ्रता से बढ़ने की क्षमता और अधिक पैदावार देने के गुणों के कारण इसे आदर्श चारा फसल के नाम से भी जाना जाता है। हरे चारे के अलावा इसे सूखा चारा (कड़वी) तथा साइलेज़ के रूप में भी पशु चारे के लिए उपयोग में लाया जाता है। ज्वार का संतुलित पशु आहार के रूप में पशुपालन के लिए विशेष महत्व रखता है। दुधारू पशुओं को संतुलित आहार खिलाने से उत्पादकता और पशुओं को अनेकों प्रकार की बीमारियों से छुटकारा मिल जाता है। हरा चारा पशुओं के लिए आहार का एक मुख्य स्त्रोत है। स्वादिष्टता एवं पौष्टिकता के कारण हरा चारा दुधारू पशुओं में दूध की मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ अनेकों विकारों से मुक्ति दिलाता है। पशुओं की दूध उत्पादकता एवं कार्य क्षमता को बढ़ाने के लिए हरा चारा वर्ष भर आहार के रूप में खिलाना अति आवश्यक है। हरियाणा में अनेकों प्रकार की चारा फसलों को आसानी से उगाया जा सकता है। वैसे तो हरियाणा प्रदेश में अधिकतर किसान हरे चारे के लिए बाजरा की प्रजाति जिसे स्थानीय भाषा में बाजर के नाम से जाना जाता है, उसे उगाया जाता है। बाजरा से ज्वार की तुलना में काफी कम चारा मिल पाता है तथा इसमें पौष्टिकता की भी कमी होती है। इसलिए पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा उपलब्ध करवाने के लिए किसानों को चाहिए कि बाजरा की बजाए ज्वार उगाएं ताकि अधिक मात्रा में हरा चारा मिल सके, जिसके लिए उन्नत किस्मों तथा उन्नत कृषि क्रियाओं को अपनाएं।

उन्नत किस्में : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा ज्वार की कई किस्में विकसित की गई हैं, जो अधिक पौष्टिकता के साथ-साथ अधिक चारा उत्पादन देने में सक्षम हैं, जिनमें एच.सी.-136, एच.सी.-171, एच.सी.-260, एच.जी.-513, एच.जी.-541 और एस.एस.जी.-59-3

सभी किस्में मीठी, स्वादिष्ट और पौष्टिक होती हैं। इनमें अधिक प्रोटीन व अधिक पाचनशील वाले गुण हैं तथा इन किस्मों को उगा कर लंबे समय तक हरा चारा पशुओं के लिए उपलब्ध कर सकते हैं।

खेत की तैयारी : ज्वार की खेती वैसे तो सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है, परन्तु अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी बहुत अच्छी है। खरपतवार नष्ट करने और फसल की अधिक पैदावार के लिए खेत को अच्छी तरह तैयार करना चाहिए। सिंचित इलाकों में मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करके और देसी हल से दो जुताई करने के बाद ही बीज की बुवाई करें।

बुवाई का समय : गर्मी की फसल के लिए अप्रैल के महीने के अंत तक कर देनी चाहिए। यदि सिंचाई व खेत उपलब्ध हो तो ज्वार की बुवाई मई के पहले सप्ताह तक की जा सकती है। एक से अधिक कटाई वाली किस्मों जैसे कि एस.एस.जी.-59-3 किस्म मार्च और अप्रैल महीने में लगाने से लम्बे समय तक पशुओं को हरा चारा उपलब्ध हो जाता है। बरसात वाली फसल की बुवाई का सही समय 25 जून से 10 जुलाई तक है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई उपलब्ध नहीं है, वहां पर ज्वार बुवाई खरीफ की फसल मौनसून में पहला मौका मिलते ही कर देनी चाहिए।

बीज की मात्रा में बुवाई का तरीका : ज्वार के लिए 20 से 24 किलोग्राम व सुडान घास के लिए 12 से 14 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 30 सैंटीमीटर के फासले पर लाईनों में ड्रिल या पोरे की मदद से बुवाई करें। बीज को बिखेर कर बुवाई ना करें। यदि किसी कारणवश छिड़काव विधि द्वारा बुवाई करनी पड़े तो बीज की मात्रा 10 से 15 प्रतिशत अधिक कर दें।

उर्वरकों की मात्रा : कम वर्षा वाले व बारानी इलाकों में बुवाई के समय 40 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ के हिसाब से खेत के अंदर बुवाई से पहले लाइनों में ड्रिल करें। अधिक वर्षा वाले या सिंचित इलाकों में 40 किलोग्राम यूरिया बुवाई के समय तथा 20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ बुवाई के एक महीने बाद भी डालें। सुडान घास के लिए हर कटाई के बाद 20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ देनी चाहिए। जिन खेतों में फास्फोरस की कमी है, वहां पर 15 किलोग्राम डी.ए.पी. प्रति एकड़ के हिसाब से बुवाई से पहले डाल दें।

निराई-गुड़ाई : ज्वार उगाने के 15-20 दिन बाद या पहली सिंचाई के बाद बत्तर आने पर एक बार निराई-गुड़ाई करें। दूसरी गुड़ाई बरसात में जब खरपतवारों का प्रकोप बढ़ जाए, तब करें। इससे खरपतवार नियंत्रण में रहते हैं और ज़मीन में नमी भी बनी रहती है। ज्वार में खरपतवारों की रोकथाम के लिए बुवाई के 10 से 15 दिन बाद 200 ग्राम एट्राजीन (50 प्रतिशत घु.पा.) प्रति एकड़ के हिसाब से 250 लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करें। ऐसा करने से खरपतवारों को काफी हद तक रोका जा सकता है।

सिंचाई : मार्च-अप्रैल में की गई फसल में पहली सिंचाई 15-20 दिन बाद तथा आगे की सिंचाई 20-25 दिन के अंतराल पर करें। इस प्रकार लगभग 5 सिंचाईयों की आवश्यकता पड़ती है। वर्षा ऋतु में बोई गई फसल की आमतौर पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि बरसात का अंतराल बढ़ जाए तो आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें। अधिक कटाई वाली फसल में हर कटाई के बाद सिंचाई अवश्य करें। इससे फुटाव जल्दी व उत्पादन अधिक होता है।

कटाई प्रबंधन : एक कटाई वाली किस्म की कटाई फल आने पर करें। बहु-कटाई वाली चारा फसल की पहली कटाई बुवाई के 60 दिन बाद करें तथा उसके पश्चात् प्रत्येक कटाई 40 से 45 दिनों के अंतराल पर करें। आप बहु-कटाई वाली किस्मों की कटाई ज़मीन से 10-12 सैंटीमीटर ऊपर से करें ताकि फुटाव जल्दी हो जाए।

विषैले तत्वों की रोकथाम : ज्वार में हाइड्रोसाइनिक अम्ल (धूरिन) नाम का एक विषैला तत्व पाया जाता है। इसका कड़वापन बुवाई के 30 दिन बाद तक बहुत अधिक रहता है। इसका कड़वापन 200 माइक्रोग्राम प्रति ग्राम से अधिक हो तो पशुओं के लिए हानिकारक होता है। इसलिए ज्वार की फसल को बुवाई के 40-45 दिन बाद ही हरे चारे के रूप में किया जाना चाहिए। अगर बहुत ज़रुरी हो तो एक सिंचाई करने के बाद ही कटाई करें और अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिला कर पशुओं को खिलाएं।

उपरोक्त किस्मों में धूरिन के विषैलेपन से बचने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें :

1. ज्वार की चारे वाली फसलों को 40-50 दिन से पहले नहीं काटना चाहिए।

2. यूरिया खाद की मात्रा ज्वार की फसल में सिफारिश अनुसार ही डालें। अधिक नाइट्रोजन फसल में डालने से धूरिन विषैलापन बढ़ जाती है।

3. यदि फसल को 50 दिन से पहले काटना पड़े, तो फसल में सिंचाई पहले करनी चाहिए और उसके दो-तीन दिन बाद चारा काट लेना चाहिए।

4. बुवाई के लिए ज्वार की उन्नत किस्मों का ही प्रयोग करें।

5. फसल को अधिक दिनों तक सूखे के प्रभाव से बचाए रखें ताकि पशुओं के लिए अधिक हरा चारा उपलब्ध हो सकते हैं।

हरियाणा सरकार द्वारा समय- समय पर हरे चारे को बढ़ावा देने के लिए किसानों को ज्वार के बीज पर अनुदान दिया जाता है। इसके लिए किसान को ऑनलाइन आवेदन www.agriharyana.org वैबसाईट पर कर सकते हैं और फिर हरियाणा बीज विकास केन्द्रों से खरीद सकते हैं। बीज हरियाणा बीज विकास केन्द्रों पर उपलब्ध हैं, जिसे किसान अपना आधार कार्ड ले जाकर आसानी से अपने नज़दीकी बिक्री केन्द्र से खरीद कर इसका फायदा उठा सकता है। ❑

31 मई को केरल में दस्तक देगा मॉनसून

राजस्थान में 25 जून से 6 जुलाई तक पहुंचने के आसार

इस साल मॉनसून सामान्य तारीख से एक दिन पहले ही केरल दस्तक दे सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक, 31 मई को मॉनसून अंडमान निकोबार द्वीप समूह में 19 मई को ही दस्तक दी थी, लेकिन केरल में 9 दिन देरी से 8 जून को पहुंचा था।

केरल पहुंचेगा। वैसे केरल में मॉनसून आने की सामान्य तारीख 1 जून है। मौसम विभाग ने गत् दिनों यह अनुमान जारी किया। घोषित तारीख में 4 दिन कम या ज्यादा होने की गुंजाइश रखी गई है। यानी मॉनसून 28 मई से 3 जून के बीच कभी भी आ सकता है। विभाग के मुताबिक, बंगाल की खाड़ी में अंडमान सागर और द्वीप समूह पर मॉनसून के दो दिन पहले यानी 19 मई को ही पहुंचने की संभावना है, जबकि वहां दस्तक देने की सामान्य तारीख 21 मई है। पिछले साल भी मॉनसून ने

पिछले महीने आईएमडी ने बताया था कि देश में इस साल सामान्य से बेहतर मॉनसून रहेगा। मौसम विभाग (आईएमडी) 104 से 110 फीसदी के बीच बारिश को सामान्य से बेहतर मानता है। यह फसलों के लिए अच्छा संकेत है। खरीफ की फसलें सामान्य मॉनसूनी बारिश पर निर्भर करती है। आईएमडी ने बताया कि 2024 में 106 प्रतिशत यानी 87 सेंटीमीटर बारिश हो सकती है। 4 महीने के मॉनसून सीजन के लिए लॉन्ग पीरियड एवरेज 868.6 मिलीमीटर यानी 86.86 सैंटीमीटर होता है। यानी मॉनसून सीजन में कुल इतनी बारिश होनी चाहिए।

पिछले साल 8 जून को केरल पहुंचा था मॉनसून : आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक, बीते 150 साल में मॉनसून के केरल पहुंचने की तारीखें काफी अलग रही हैं। 1918 में मॉनसून सबसे पहले 11 मई को केरल पहुंच गया था, जबकि 1972 में सबसे देरी से 18 जून को केरल पहुंचा था। बीते चार साल की बात करें तो 2020 में मॉनसून 1 जून को, 2021 में 3 जून को, 2022 में 29 मई को और 2023 में 8 जून को केरल पहुंचा था।

इस बार ला नीना से अच्छी बारिश का अनुमान क्लाइमेट (जलवायु) के दो पैटर्न होते हैं, अल नीनो और ला नीना। पिछले साल अल-नीनो सक्रिय था, जबकि इस बार अल-नीनो परिस्थितियां इसी हफ्ते खत्म हुई हैं और संभावना बन रही है कि तीन से पांच हफ्तों में ला-नीना परिस्थितियां पैदा हो जाएंगी। पिछले साल अल-नीनो के समय सामान्य से कम 94 प्रतिशत बारिश हुई थी। 2020 से 2022 के दौरान ला-नीना ट्रिपल डिप के दौरान 109 प्रतिशत, 99 प्रतिशत व 106 प्रतिशत बारिश हुई थी।

किसान भाईयो!

गेहूं के अवशेष (नाड़) को

न जलाएं

क्योंकि

- लगभग 5 करोड़ जीव प्राणी प्रभावित होते हैं।
- तापमान में औसतन 2-5 डिग्री की बढ़ोत्तरी हो जाती है, जिससे जीव-प्रणाी प्रभावित होते हैं।
- पशुओं के लिए पराली/तूड़ी में कमी आ जाती है।
- मिट्टी में मौजूद खुराकी तत्त्व नष्ट हो जाते हैं।
- मिट्टी की उर्वरा-शक्ति खत्म हो जाती है।
- 18 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड गैसें हवा में बिखर जाती हैं, जो श्वांस की बीमारियों को जन्म देती हैं।

यदि आप फिर भी गेहूं के अवशेष को जलाते हो तो आप सिर्फ मतलब-प्रस्त हैं !!

धनेशा क्रॉप साइंस ने मनाया स्थापना दिवस

धनेशा क्रॉप साइंस ने गर्व से 5 मई, 2024 को अपना पहला स्थापना दिवस मनाया है, जो उज्जवल भविष्य के लिए दृढ़ विकास, नवाचार और आशाजनक साझेदारी के एक वर्ष का जश्न मनाया है।

1 से 6 मई तक सप्ताह भर चले इस उत्सव में धनेशा क्रॉप साइंस ने अपने सम्मानित व्यवसायिक भागीदारों को पूरे नेटवर्क में केक काटने की रस्मों के साथ सम्मानित किया। ये समारोह सहयोगी भावना और साझा सफलताओं का प्रतीक थे।

6 मई को टीम के साथ जश्न के दौरान श्री धर्मेश गुप्ता - प्रबंध निदेशक ने कम्पनी के भागीदारों और हितधारकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि, "हमारा पहला संस्थापक दिवस न केवल हमारी उपलब्धियों का उत्सव है, बल्कि कृषि के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की पुन: पुष्टि भी करता है। जैसा कि हम आगे देखते हैं, हम विश्व स्तर पर कृषक समुदायों के लिए विकास, सहयोग और सेवा की अपनी यात्रा जारी रखने के लिए तैयार हैं।"

कम्पनी के पिछले वर्ष को देखते हुए और सेलर कोस्टर यात्रा को याद करते हुए, एम.डी. अभिभूत हो गए और अपनी टीम को उनके सराहनीय टीर्म वर्क और एक नए उद्यम में अपना विश्वास रखने और कम्पनी के लक्ष्य के साथ कड़ी मेहनत करने की भावना के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि, "पारदर्शिता और कड़ी मेहनत आपको एक संगठन में सफलता की ओर ले जाने के लिए एक बेहतरीन संयोजन है।"

कृषि प्रथाओं में क्रांति लाने और टिकाऊ कृषि समाधानों को बढ़ावा देने की दृष्टि से स्थापित, धनेशा क्रॉप साइंस ने अपनी स्थापना के बाद से महत्वपूर्ण प्रगति की है। एक नया नाम होने के बावजूद, हम बीते हुए वर्ष में धनेशा के बारे में बहुत कुछ सुनते रहे हैं। उन्होंने बाज़ार में और किसानों के बीच बहुत आसानी से मज़बूत उपस्थिति दर्ज करवाई है। उनके उत्पाद की गुणवत्ता और ग्राहकों की संतुष्टि उनके लिए एक मज़बूत नींव रखने और प्रतियोगिताओं के मानकों को तोड़ने के लिए प्रेरक शक्ति रही है। अब, हम कह सकते हैं कि 1 वर्षीय धनेशा उद्योग में किसी भी स्थापित खिलाड़ी के रूप में प्रमुख खिलाड़ी है।

कम्पनी पहले से ही सौ से अधिक कर्मचारियों का परिवार है, जो पूरी दक्षता के साथ अपनी भूमिका निभाने के लिए पूरी तरह से समर्पित और समान रूप से योग्य हैं। संख्याओं के बारे में बात करते हुए, जो फिर से आश्चर्यचकित कर देने वाली है, उन्होंने देश भर में 2000 से अधिक चैनल भागीदारों के साथ साझेदारी की है और यह संख्या तेज़ी से बढ़ रही है।

अनुभव और विशेषज्ञता के साथ, उन्होंने हर्बिसाइड्स, कीटनाशक, कवकनाशी, पी.जी.आर. सहित उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का एक पोर्टफोलियो तैयार किया था और अब वे पूर्ण समाधान और बेहतर कल के लिए जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों को शामिल करने के लिए इसका प्रसार कर रहे हैं। अब तक, लगभग 60 उत्पाद पहले से ही ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं और अधिक उन्नत प्रौद्योगिकी-आधारित उत्पाद आने बाकी हैं। उन्होंने देश को उन्नत उत्पाद उपलब्ध करवाने के लिए प्रौद्योगिकी संचालित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ गठबंधन किया है।

वे नवीन तकनीकों के प्रभावी उपयोग से किसानों में समृद्धि लाने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने के मिशन पर हैं। वह समय दूर नहीं जब हम धनेशा को दुनिया भर में देख सकेंगे। इसके साथ, वे उन सभी लोगों के प्रति हार्दिक सराहना और आभार व्यक्त करते हैं, जो उनकी अब तक की उल्लेखनीय यात्रा का हिस्सा रहे हैं और आने वाले वर्षों में निरंतर सफलता की आशा करते हैं।

पंजाब में धान की रोपाई 11 जून से दो चरणों में होगी

पंजाब में धान की रोपाई दो चरणों में 11 जून से शुरू होगी। 11 जून को रोपाई बॉर्डर पर कंटीली तार के पार के खेतों और केवल नहरी पानी से सिंचाई करने वाले 6 ज़िलों मुक्तसर साहिब, फरीदकोट, मानसा, फाजिल्का, बठिंडा और फिरोज़पुर में ही हो सकेगी। अन्य क्षेत्रों में यह 15 जून से होगी। इससे पहले कोई अगर रोपाई करेगा, तो उस पर कार्यवाई होगी। साल 2023 में धान की रोपाई चार चरणों में हुई थी। सरकार ने दावा किया है कि सीज़न के दौरान रोज़ाना 8 घंटे बिजली सप्लाई मिलेगी। पंजाब में लगभग 31 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में धान की रोपाई होगी। राज्य में सीधे धान की बुवाई 15 मई से शुरू हो गई है। 31 मई इसकी अंतिम तारीख है।

दूसरे चरण में ये ज़िले : मोगा, संगरूर, बरनाला, मालेरकोटला, पटियाला, फतेहगढ़ साहिब, मोहाली, रोपड़, लुधियाना, कपूरथला, जालंधर, होशियारपुर, नवांशहर, तरनतारन, अमृतसर, गुरदासपुर और पठानकोट में 15 जून से रोपाई शुरू होगी। इन ज़िलों में नहरी पानी और ट्यूबवैलों से सिंचाई की जाती है।